
THE SHOES



FERDINANDO

जिलेट मैन: जूते

फ़र्क क्या है?

10 नवंबर 1984 था, सुबह 9:30 बजे। मेरे पिता ने मेरे कमरे का दरवाज़ा खोला, रोशनी अंदर आने दी, और बोले, “नांदो, दरवाज़े पर काराबिनीएरी खड़े हैं, तुझे पूछ रहे हैं। क्या चूतियापा किया है तूने?”

“पापा,” मैंने कहा, “मज़ाक़ कर रहे हो क्या? सोने दो मुझे। आज सुबह देर से लौटा हूँ। कल मेलानिया ने मेरा कचूमर निकाल दिया।”

“कौन साली मेलानिया? गाँड उठा, मुँह धो, कपड़े पहन, और बाहर आ। उनसे बात कर और पता कर कि चाहते क्या हैं।” “ठीक है, आ रहा हूँ।”

मार्शल पोस्का और उप-ब्रिगेडियर पाताने ने मेरा पहचान-पत्र जाँचा और फिर मुझसे कहा: “अगर तुम 17 नवंबर को अपनी अनिवार्य सैन्य सेवा पूरी करने के लिए कासेर्ता के फ़ेरारी ओर्सी बख़्तरबंद सैन्य स्कूल में हाज़िर नहीं हुए, तो सैन्य अभियोजक का दफ़्तर कल सुबह सबसे पहले गिरफ़्तारी का वारंट जारी करेगा। हम आएँगे, तुम्हें उठाएँगे और जेल ले जाएँगे।”

मैंने उन्हें देखा और कहा, “कॉफ़ी पिँएँगे? मैं अभी-अभी उठा हूँ। अभी आता हूँ, फिर आप मुझे इस फ़िल्म का दूसरा हिस्सा सुनाइएगा। आप लोग मज़ेदार हैं, मानना पड़ेगा।”

मेरे पिता ने सिपाहियों को इशारे से बताया कि मेरा दिमाग़ फिर गया है, और वे रुक गए। जब मैं रसोई से लौटा, तो मैंने पूछा कि क्या मुझे भर्ती का कोई पर्चा मिलना चाहिए था। उनके पास मेरी माँ के दस्तख़त वाली रसीद थी, और वह ठीक उस वक़्त काम पर थी।

एक पल और गँवाए बिना, मैंने ग़लतफ़हमी के लिए माफ़ी माँगी और उन्हें भरोसा दिलाया कि मैं उस दिन वहाँ पहुँच जाऊँगा, वे कपड़े पहनने को तैयार जो आप बारह महीने पहनते हैं, जब तक कि वे दही की तरह एक्सपायर न हो जाएँ।

मैं तैयार हुआ। जिस रात मैं निकला, मेरे पिता ने बाँह हिलाकर मुझे विदा किया। जब मैंने उनसे कहा कि मेरे गिने-चुने लीरा में कुछ और जोड़ दें — आज के दस यूरो के बराबर — तो वे बोले, “इसी में काम चला। तुझे महीने के 60,000 लीरा मिलेंगे। बस उतने में ही जीना है।”

मेरी माँ ने सोने का नाटक किया और जवाब नहीं दिया। रात 11:45 बजे मेरा दोस्त ओरेस्ते अपने पिता की फ़िएट 850 में मेरे घर आया — उसके पिता रेलवे में काम करते थे — और मुझे स्टेशन छोड़ आया। तब मैं अपने माँ-बाप का बर्ताव नहीं समझा था। उन्होंने जो किया, वह मुझे सामान्य लगा। वह मेरा पहला असली सबक था।

मैं अगली सुबह 6:10 बजे नेपल्स पहुँचा, फिर कासेर्ता की ट्रेन पकड़ी। स्टेशन पर मैंने बैरक का रास्ता पूछा और फाटक तक तीस मिनट और पैदल चला। मैंने ड्यूटी अफ़सर के सामने हाज़िरी दी, जिसने कहा, “एक और देर से आने वाला, खेप 9/84।” मैं एक नए घर में दाख़िल हो रहा था। मैं उसे एक साल बाद छोड़ने वाला था।

उन्होंने मुझे सीधे भंडार भेज दिया। मुझे एक पिट्टू थमाया गया, फ़ौजी बूटों के दो जोड़े — एक नीचा, एक ऊँचा — एक बेल्ट, ऊनी मोज़े, खाने के दो डिब्बे, एक मग, एक पानी की बोतल, दवाओं के लिए स्टील का एक डिब्बा, स्नीकर, छलावरण वर्दी, एक टोपी, एक परेड वर्दी, बैरक में पहनने के लिए एक फ़ेज़ टोपी, पहले विश्वयुद्ध से सीधे निकले दो जोड़े ज़ाँघिए, और पूरी बाँह की दो ऊनी बनियानें। मैं मुस्कुराया, अभी यह समझे बिना कि वे बनियानें किस हद तक मेरी जान बचाने वाली थीं।

लगाता था जैसे किसी फ़िल्म के अंदर हूँ। मैं सीटी बजाता हुआ बाहर निकला, और सामने से आते एक अफ़सर ने मुझे रोका और सलामी न देने पर दो दिन की सज़ा दे दी। किस्मत ने तय किया कि मैं अड़तालीस घंटे अपने बिस्तर तक क़ैद रहूँगा, किसी को देखे बिना।

लगातार दो सुबह मुझे पाख़ानों की ड्यूटी मिली: 280 आदमियों के हगने के बाद शौचालय साफ़ करना — और सब के सब उसे अंदर गिराने में कामयाब नहीं हुए थे। मुझे घिन नहीं आई। वह भी सैन्य सेवा थी। मुझे देखना और सीखना था कि हर कोई एक ही रंग का नहीं हगता, और यह सिर्फ़ खाने की वजह से नहीं होता।

एक हफ़्ते बाद, मेरे क़स्बे के पास का एक साथी सिपाही मुझसे मिलने आया। उसका नाम फ़्रांको निकोलो था, खेप 5/84। फ़ौज के बाहर की ज़िंदगी में वह जूतों के एक विश्वप्रसिद्ध ब्रांड का सेल्स प्रतिनिधि था। मैं उसे भा गया। चालीस दिन बाद उसने मेरे लिए अड़तालीस घंटे की छुट्टी का जुगाड़ कर लिया, और हम उसकी कार में साथ-साथ घर की ओर उड़ चले। सड़क पर आठ घंटे, पर वसूल।

घर पर, मेरी माँ ने मुझसे पूछा कि क्या मैं भाग आया हूँ। उसे उम्मीद थी कि मैं कहीं ज़्यादा लंबे वक़्त तक उसके सिर से टला रहूँगा। इतवार की आधी रात को फ़्रांको मुझे लेने आया और हम वापसी के सफ़र पर निकल पड़े।

जैसे ही मैं बैठा, उसने कहा कि शराब का पाँच लीटर का जग अपनी टाँगों के बीच थामे रखूँ। वह उसके मार्शल के लिए था — उसकी नज़रों में अच्छा बने रहने का एक तरीका। पर बैरक पहुँचते-पहुँचते हम नशे में धुत थे। हमने फ़ौरन दो दिन के लिए खुद को बीमार दर्ज करा दिया।

फिर एक अफ़सर ने सबके सामने फ़्रांको को धमकाया। फ़्रांको ने जवाब दिया, “जिस पल हम बैरक से बाहर क़दम रखेंगे, मैं तुझे गोली मार दूँगा।” अफ़सर ने उसे गिरफ़्तार करवाया और कोर्ट-मार्शल करवा दिया। उसे सैन्य जेल में साठ दिन मिले।

मैंने उसे वहाँ फिर कभी नहीं देखा, क्योंकि मेरा तबादला कहीं और हो गया था। पर जब वह वक़्त बीत गया, हम अक्सर काम की जगह के पास मिलते और साथ खाते, मार्शल की शराब को याद करते हुए।

उसने जूतों की सेल्फ़-सर्विस दुकानें खोल ली थीं, और धंधा अच्छा चल रहा था। जब भी मैं कुछ ख़रीदने रुकता, मेरी शाही खातिर होती — छूट के ऊपर छूट। पर सिर्फ़ मैं जानता था कि वह मुझसे बेहतर सेल्समैन था। मैंने कभी एक शब्द नहीं कहा। मैं पहले से ही एक ज़िलेट मैन था।

रंगरूट प्रशिक्षण केंद्र

ट्रेनिंग शुरू हुई: एक राइफल को खोलना और दोबारा जोड़ना, फिर दूसरी को, फिर एक पिस्तौल को। उन्हें साफ़ करना। मार्च, दौड़, विराम, भोजनालय, बैरक के ज़रूरी काम, जवानों का मेस, एनसीओ का मेस, और अफ़सरों का मेस।

क्रिसमस था, रात के नौ बजे, कड़ाके की ठंड। वे ऊनी बनियानें जान बचाने वाली साबित हुईं, खासकर जब हमारी पहली पहरेदारियाँ शुरू हुईं। फिर उन्होंने हमें इनाम में बारूदखाने की पंद्रह दिन की पहरेदारी दी। नहाना एक मृगतृष्णा था। अपने जाँघिए के अंदर आप परजीवी और मैल में फ़र्क़ नहीं कर पाते थे, न तिल और जूँ में।

तापमान पागलपन की हद तक था: माइनस तीस। पेशाब करना नामुमकिन था — वह जम जाता था, और आप अपने लंड से लटकी पेशाब की बर्फीली सलाख लिए घूमते थे। हाहाहाहाहा।

और अगर आपने सो जाने का ख़याल भी किया होता, तो सज़ा और जेल का जोखिम उठाते। दिक्कत यह नहीं थी कि जाना कहाँ है: हम ठीक वहीं पहरे पर खड़े थे, क़ैदियों और गोला-बारूद के कारख़ानों के बीच।

छुट्टी की एक शाम, मैं अफ़सरों के मेस से कुछ दूरी पर था। मैंने ख़ूबसूरत, महकती औरतों को अपने अफ़सरों के साथ नाच के लिए आते देखा, जिनसे रौब और ताक़त टपकती थी। और मैं समझने लगा कि मेरे पिता ने बाईस की उम्र में कैसी मुश्किल झेली होगी, बख़्तरबंद घुड़सवार दस्ते में कप्तान के रूप में सेना छोड़ने के बाद। टैंक। वही चीज़ें जो मुझे चलानी थीं, बस मैं उनके अंदर समा नहीं पाता था।

पर एक दोपहर मेरे कंपनी कमांडर ने मुझे बाहर के एक काम के लिए बुलाया। मुझे एक औरत को कार से नेपल्स पहुँचाना था। किसी ने नहीं बताया कि वह कौन थी। बाद में पता चला: वह बैरक की कमान सँभालने वाले जनरल की बेटी थी।

चुनाव मुझ पर आ गिरा था, और कोई नहीं बता सकता था कि क्यों। मैं एक सिपाही था; ये सरकारी मिशन थे, जिनके अलग से पैसे मिलते थे। पर पैसा पूरी कहानी नहीं था।

उसका नाम कार्ला था। अड़तीस साल की, कभी शादी नहीं, कभी सगाई नहीं। खूबसूरत कहना तो बहुत कम होगा — उकसाने वाली और शरारती, कम से कम कहूँ तो।

वह मेरा पहला लिंग-पुण्य था, और बिल्कुल बुरा नहीं रहा। सुना कि उसने मुझे दोबारा ढूँढ़ा, पर तब तक मुझे सेना की खिलाड़ियों वाली कंपनी में भेजा जा चुका था। मैं रग्बी खेलता था, और बाद में सैन्य राष्ट्रीय टीम में पहुँचा।

जूते

जूते ऐसी चीज़ हैं जिनके बारे में हम शायद ही कभी गंभीरता से सोचते हैं, हालाँकि शरीर और मन के लिए वे बेहद मायने रखते हैं। उन दिनों यह और भी ज़्यादा मायने रखता था कि वे चमड़े के हों — वह अकेली चीज़ जो आपके पैर सूखे और आपका पूरा शरीर चालू रखती थी।

मैंने कभी ज़्यादा जूते नहीं घिसे। मेरे पास बहुत कम रहे, और जो थे, उन्हें मैंने हमेशा मरम्मत कराने की कोशिश की। मुझे काम से मतलब था, शक्ल से नहीं। आप जिसे चाहें, जिन जूतों से चाहें, उसकी गाँड पर लात मार सकते हैं, और कोई नहीं देखता कि उन पर किसी डिज़ाइनर का लेबल है या नहीं।

आज मेरी पत्नी मुझसे जूतों की एक सेल्फ़-सर्विस दुकान पर रुकने को कहती है। मुझे याद आता है कि वह दुकान कभी फ्रांको की थी, मेरे साथी सिपाही की, और हम अंदर जाते हैं।

चालीस साल बीत गए हैं। वह अब भी वैसी ही है — वही नक्शा। जब मेरी पत्नी अपने जूते चुनती है, तो डिब्बे मुझे थमा देती है, और फिर उन्हें पहनकर देखने के लिए बेंचों की ओर बढ़ जाती है।

इस बीच, एक औरत पूछती है कि महिलाओं का हिस्सा कहाँ है, और मैं रास्ता दिखा देता हूँ। एक सज्जन पूछते हैं कि क्या फ़्लाँ जूता 41 नंबर में मिलेगा, और मैं बता देता हूँ कि वह नंबर बिक चुका है। जूते पहनकर देख रही दो औरतें मेरी राय पूछती हैं, और मैं कहता हूँ कि इन जोड़ों में वे लाजवाब लग रही हैं।

मेरी पत्नी को कुछ पता नहीं चलता। बीस मिनट के लिए, खुद को भी एहसास हुए बिना, मैं दुकान का सेल्समैन बन गया हूँ। सब मेरे पास आते हैं। मर्दों को मैं रूखे और बुरे ढंग से जवाब देता हूँ, जबकि औरतों को उनकी पसंद पर मेरी पूरी दाद मिलती है।

काउंटर पर भीड़ लग जाती है और वह लगभग ठप हो जाता है। मालिक समझ नहीं पाता कि हो क्या रहा है। हम अपने जूतों के पैसे चुकाते हैं और बाहर की ओर बढ़ते हैं, पर पहले मैं पूछता हूँ कि क्या वह फ्रांको को जानता है। “हाँ,” वह कहता है, “वे मेरे पिता हैं।” “तो उन्हें मेरा सलाम कहना।”

जब हम निकलते हैं, औरतें मेरी ओर इशारा करती हैं और हाथ हिलाती हैं। मेरी पत्नी को अब भी कुछ पता नहीं चलता।

मुसीबत कोई दो घंटे बाद आती है, जब मेरी बेटी उसी जूतों की दुकान पर वापस जाना चाहती है। वहाँ, मालिक का बेटा मुझे एक तरफ़ ले जाता है और कहता है, “फ्रेगा साहब, काउंटर पर मैंने कुछ नहीं कहा। मैं नहीं चाहता था कि ग्राहक सुनें और तमाशा बने। पापा के साथ 2021 में एक भयानक हादसा हुआ था, और 2023 में वे हमें छोड़ गए।”

मुझे सचमुच अफ़सोस होता है। मैं उसके बेटे को एक क्रिस्सा सुनाता हूँ जो मैंने उसके पिता के साथ जिया था, और वह मुझे कसकर गले लगा लेता है, आँखों में आँसू लिए।

मेरी बेटी अपने जूते ख़रीदती है, पैसे देती है, और हम निकल पड़ते हैं। विदा करते हुए बेटा पुकारकर कहता है, “मिलने आइएगा। मुझे आप जैसे सेल्समैन चाहिए, जो मुफ़्त में काम करें।” और मैं कहता हूँ, “तुमने मेरी किताबें डाउनलोड नहीं कीं, है न?”

वह मुस्कुराता है। और ज़िंदगी चलती रहती है।

फर्दिनांदो